

ॐ नमः श्री गुरुक वरु वा ज्ञा श्वा

यथा ॥ न सं वा स ड ढ डः का व न म

चार्यन. ना. ये. प्र. के. न. दा. हा. सा.:

कृत्वा यथा दृष्टं कथं स मा लं कं वा

न. वा. कि. लं. द. हा. स्वा. लं. ख. के. स्थ. वा.

यश्चरुनशहिनरुशकावत्र

॥ अथ नंगमधिवासनविधिसादृशकुर्यान्वासयिका

यदं गीर्थसंखकालाने॥ कृपांमालकृपयन्माः

हाल ज ओ दा डः ग व झ द ड क ल ड झ द ड या म

अथैवायन॥ श्रीखलसाइइनायः श्रीकृष्णाय नमः

॥ अं स न र शि नि २ क न र क न र द रु ॥

स. धन २ धनि २ धू २ रु २ न २ नि २ रु २ न २ म २ न २

वन २ नस्मिह कस रुअप निमल्लि न मनी नः कल २ रुय २ रुग वनः सा मादि रुय स व नू ह क
 व नः वृक्ष दौ दिः अषी द व ग ह स १ चि रु व न क म ला य अर्य प्र कि रु स्ता हा ॥ ॥ ऊ ऊ
 माने क ल ग व ल या स दा रु ल स्ता ॥ ॥ इ हा य के नी र्थ या लै र व गु या अ पू र्ण या र्थ य व
 ॥ य ल य रु न य जा या सै र्थ रु यः ॥ ॥ कः आ स न क मा अ ग व ल यो मा ल न ॥ ॥ न्या हाः
 यि का य म द ज या था स ऊ र्थ प नि मा न र्थ था प नः ऊ हा अ ना र्थः न्या हा य ल स य ना या न ॥ स
 यो र्थ गु न स लु ल य च ग र्थ य च कू हा आ दि य जा य मि या दि य जा ति न्धु क के क ल सा ध ना ॥

२५

विमसाधि

आ दि आ रु य रु काल य जा काल ला य ॥ स लु ल थि ल लै र व लि ह ना य य जा कू य ॥ ऊ ऊ मा न
 कि रु य स क ल या र्थ वि य क ॥ थ न आ चार्य स न धा न या य ॥ न न्दि न म ल्का व का सी मा मा रु तिः
 या प नि मा न र्थ गी क मा ल का मा ल ॥ ॥ आ व क या स थ क ल मा ॥ ऊ हा य जा न्या
 हा यि का य म द ज वि धि र्थ पू जा अर्य या य ॥ व ला क ल हा र्थ न्या हा य लै स धू य रु य ॥
 नी र्थ या लै र व क या र्थ च वी हि य के ग न्ध य रु स रु य रु य दि र्थ च ग र्थ य च य ल व अ रु स गः
 रु य धि ॥ लै य म आ रु य म र्थ च न ल ॥ थ क क र्थ लि न्या हा य लै या ग ल हा कू मा लि स रु का रु २१

चि यः दृष्टि कः दया या निसा वे मुद कां न्या हा यल स किय कः दया पूजा या हा गु क व नि व ल
खाल वलि न्या हा यल या हा डान क ॥ थन कान क दया काया लन का क पू स क य ॥
थलि अग्नि स्तु यन अग्ना रु मि ॥ दया पूजा न्या हा यल सः स्वान क र्थ ए व ना ॥
अं व का न ज न ल नू प नि चि न्या ॥ अं व का म मा द क ०० दू ॥ अं अ ४ दू ॥ ॐ ए न हान
सु क रू न य न मा भू न रु म र्थ ॥ अ क फ २ स हा क फ स्वा हा ॥ क ल क ल जा स नं द व का च क म डि मि
वि चि न्या ॥ स ह दी ऊ म यू षे हान म धु ल मा नी य स म च कं य व द्य म हा ना ग न द वी रु य वी

२१

3

धिचिरु नृपयुगुलीरुसकनसिरुनंविचिरुयन॥चिह्नं च समय देवनाहान देव यानकी
 रुकस्त्रिरावा॥ ॥ आयाध निःलाः स्त्राः चः ऊः स्त्रीः ने सः धाः मः ॥ यथा न्या धा देवनाहानि धं
 धमो अका नाम ख दकि साकिरु॥ थन आहू कि विय धा १००० सखा हू कि ॥ थन द धाः
 वलि विय रुडा कया रु १ आगम रुल सादि रा वलि विय ॥ प च धा ना हा य क सी सा
 हू कि शी क का ला ०० न ॥ य धू रु दू य य क सा लिय दं क ली का शी स ना पा क स रु स्य दू य या गि नी प
 निरु स ना पा क न हिल स थिय क ॥ थं लि च क का ल बा पा लि हा रु य जा द डाले व ला य द डाले

क॥यंचसालिलहिचकथनमधुलथिलधलयूर्ध्याया॥दकक्षायकाःश्रीहीवाद॥
 वेत्यकुलसाःचदिकाकुसाःसांसाजकमालसाःमृषारिनसायकायाचकनिमिचामयकाकु
 ल१अदुआलपाक१दक्रिआदी॥२वियसाठसलनेमलेआहायावालसिकलया
 साहलिकयकायलनचियध॥कधनदाआखनविपाकनदडाचिसांसांलकसि
 वमुककुलसाकृदिनेआआगुलि॥कायाजलआसनकधलसवलाजहामसइय॥आकाकने
 कसायलसखनकयकदकक्षायका॥आवाकृतिविसर्जनवलिक्षया॥थलिनिगुथासःन्याहा

२८

४

५५

यजकयननयंचगकसाइदुनहासीकुलकुरि नवपसलखधानाथसीन्याघनकयन्याहाव
 लियाक१वियनिरुनिर्णवलिवियमाल॥॥आगमदडाकुलसाःलेपयद्युयदडाइन
 साःसांसाजकममाल॥नंगकुरु
 जायायःसुरुवलामलाचकनंगः॥यःदडायकाधनहाआवापोलिचिरुकाजहमय
 आगममकुलसाःकुहायकाजालनकलहालखकसीनंगकुरुय॥थकिन्याअपिकयविधि
 इजा॥॥५५॥॥अथमनंगद्यविधिमाह॥कलहायकाजालथायनय॥

पंचनभिमिलामवनज अथन नंगमिलामवन १ थ कल्लपनयाय ॥ ॥ अचार्यगु नमस्तु ॥
 पंचगव्याः सिधुर्ग मधुलथिले लेखविले शुभ्यः प्रिसमाधिः कृष्णपूजः न्यासघनसपकाश ॥
 थननंगमिलामस्वी कर्षकावना ॥ ॥ यंचलेवंदं ॥ वीरनिष्य नाना ॥ अंजुंजी खेदं ॥ वंवा
 चनादिस्वयुयानध्यात्वा ॥ नरुनि ॥ वक्षिणसर्वकथागरुहसूदं का नादिनिष्य नरु
 ननंगेष्टहकीरुनी विचिंर्य ॥ आः पाः धः नि ॥ विधि थं पकायाय ॥ वृष्य न्यास ॥ पं लाः धं रु
 क ॥ थननंगमिलामवनज थिस्वी जाय ॥ अंजुंष्ट वजचिरुसमयदं नीले ॥ ॥ अं वं वजचि

२६

५

रुसमयदं ॥ श्रीक ॥ ॥ अंजुंष्ट वजचिरुसमयदं ॥ पीक ॥ ॥ अंजुंष्ट वजचिरुसमयदं ॥ व
 क ॥ ॥ अंखंष्ट वजचिरुसमयदं ॥ ध्यास ॥ ॥ सर्वकर्मिक सकुल अथन नंगानि ॥ यधम
 पं लाः धं रुक ॥ वलिदाकयी ॥ ॥ ॥ निनगाधि वासन विधि ॥ ० ॥ धं लिखक २ द
 अरुले ॥ अंष्ट २ द अयाः सलमरु ॥ ॥ लोला चनकं क म न स व रू प न स वी जा क न वा यः
 थमकु न स विधि थं प विमान थं प जा या यः धूय नी ला ऊ न ला हा नि न का वं क सिधवः ऊ
 ऊ सः स्वी न वं यः सक ॥ स रू लयः यधम ॥ वलिदाकया अका नामरु ॥ ॥ दं अया क दं अया

८

कतिनमस्तु नमस्तु ॥ कथायै गयूजाया दक्ष देवस्तु ददय नमस्तु ॥ ३०
 ॥ कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥
 धूप ॥ समस्त नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥
 लप्यामस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥
 धिस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥
 अया ॥ नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥

३०

पाथीवस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥
 कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥
 मस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥
 कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥
 यावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥
 दयस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ कथावस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥

या यः यं लाघं रुक ॥ दंडाया ह दयक या गु न ग उ स व रु न धि सं आ चार्य न दंडा या म नु जा य
 या यः यध मोः अका वा मू ख वलिः क्षा का क न धा व उ य उ य ॥ न ग उ स व रु धि य ॥ अं स पु नि धि
 क व रु स्वा हा ॥ द रु क्षा नि स वा व दा हा ल य ॥ व लि या क र वि य ॥ पी था दि य रु जा ॥
 म लु ल थि ले रु किः क्षा का क न रु मा य न ॥ स ग व क्ष र द कि क्षा य रु जा ॥ आ ग म रु ल
 सा य क र दं दं द य कं य रु जा ॥ गी क या र्य मा ल ॥ यं च क्षा लि या रु य रु ॥ स म या च रु ग क्ष च रु ॥
 रू नि स नं ग रु य क्रि या वि धि ॥ ० ॥ थ न लि स म रु य ध न का डी न्या क्ष इ थ न या क वि धि ॥

३१

७

२३३

कायी न्या क्ष व लि वि य ॥ थं लि वि धि थं रु ग व जी ल न रु य ना या य ॥ अथ वा इ स ल य न न्या
 क्षा ल य गु रु न सा य रु या य म मा ल ॥ उ चा य गु न म लु ल यं च ग र्वा सि न्धु र ॥ आ ग म रु न सा
 ना दि का यः गी क म जी क थं रु ला ॥ हि स मा धि क ल क्षा य रु जा न्या क्ष य न स वि धि थं
 य रु जा धू न का डी रु ल द व या क ॥ स्वी रु रु क र्वा धू य या य ॥ अं रु ग व न रु
 अ म क स र्व वि या ना रु न मा रु रु क रु मि रु मि रु ना थ जी रु य न क्रि या रु रु स र्व स त्व हि
 का थं य रु मा कं य रु ना य च रु ना रु क रु रु व न प्र वि क्षा स क्षा जी न रु लि नि नि ॥ धा व ३

पञ्चय॥ धलि अर्थ या य॥ सा इ इ नाय अ क क य च न ल च ल दा हा स्त्री क र्ण हा य क॥ ॥ वा क॥
 ओं स न २ मि नि २ क य २ क नू २ द ह २ य च २ रु न २ हि नि २ रू २ अं का न वृ ष व षा ध न २ धि नि २ ध नू
 २ क न २ मि नि २ रु नू २ म न २ व न २ ॥ य मि हा क स रु सु प्र मि म लि क धा नी न क ल २ क य २
 रु ग व नू मा मा दि ल य म व नू ल कू र्वे ॥ न वृ ष व न द अ वि द व ग ल य अ म क द व का च
 न ल क म ला य अ र्थ प्र मि कू र्वा हा ॥ हां र व प जा ॥ ॥ थ न न्या हा य न स चि र्म क या प क वि ध मि
 का रु हा अ कू ल दे व या क ही रु न आ चार्य न का म जा व रु ना य अ कू र्वा हा स्त्री का र्ण द व या

३२

४

म नू जा य या य धा न १० रु ध न का अ ना य न द ड या क हा य स्त्री न कू च क॥ न्या हा य ल न द ड या
 क ल य म जि ड म द ड कू ल सा द ड या कू ड न वा ना स क र्क क र्ण क स क न स ल य ॥ दे व या
 मि सा व र्ण द ड मि य क॥ ध लि क ॥ रु या य कू ल म्ब य न अ ग्ना रु मि वि धि र्थ द व ल
 जा क क र्म नि र्ण ना मा क र्ण ना या य ॥ थ न द ड या जा दे व ना रु मि आ रु मि वि य स रु
 आ रु मि १००० स र्वा रु ला ॥ ॥ थ न आ ग म रु ल सा र्थ च मा लि प जा द स व लि वि य दी ग
 व लि वि य थ न मा सा रु मि य र धा ना हा य क गी क य नि मा न र्थ रु ल प क सा लि का य म ल

मन्त्र

लधिलकलानकनः थनयनयः श्रुयायः रवमायः श्री वा दः दकः सायः सासमायः वः कः सायः
 किगलचक्रधुतिन्याः कलययाकविधिरुलाः सुरी ॥ ॥ ॐ निजीः ॥ ॐ धाने विधिसमाः
 का ॥ ० ॥ १२ जीः ॥ ॐ धाने याय ॥ याकः निमः ननायायगुवाकः ॥ ॐ अमकः दवनाधि
 यगिनमाः कः पः कः नैरावनाः ॥ नार्थः सत्वा नी कपा कू नू यं वाय वा नैयः जादिः ॥
 कयाः क्षायया म्यः सः प्रसं नो रुवः अमकः दवनाः गानुसर्वानः प्रगिगुः मनीः निविष्टीः कः लाः
 कू नू दानयः अमकः सः उद्याननार्थः सः कयाः यः कः यो म्यः ॥ धाने ३ पदयः ॥

३३

१ अथ यथि वायविधिमाह ॥ ॥ गुनमः लः दः गुलिः कः ॥ न्यासधूनकाडा ॥ थनराव
 ना ॥ लः रवकः अमिकारु नूप विः ॥ कः कः ॥ कः ॥ ॐ मः ॥ सुयथा कर्म ॥ थयाः नू गः उः सः कः ॥
 सः चः सः पालः सः ॥ वः कः पः सः ॥ वः कः ॥ रा ॥ वना ॥ ॐ अः ॥ १२ ॥ थनयदयः अधिः सानयाय ॥ वा
 मदः किः ॥ कः नैयः ॥ चः यः सः ॥ य ॥ निजलेजः वः कः मः टिकिः ॥ धाः लाः ॥ ॐ अः ॥ १३ ॥ थनही
 चपकिथः कः लः ॥ मलयकिथः कः लः ॥ रावना ॥ कः कः ॥ सः यः कः ॥ नादिपः ॥ रः लीपः ॥ रुः कः ॥ दीः ॥ चारुविः
 कः ॥ धीः ॥ काः ॥ वा नीकः ॥ वा रवः ॥ कः मः कः ॥ नाकायः पः निनः ॥ विविंयः ॥ ॐ वः कः ॥ सः लः ॥ ॥ थमः कः ॥ धाने १०८

पुष्पवर्णः

जाययाय॥ अं वज्रय क रू॥ धम रु नै म ड॥ ॥ धनमसि ला व ना॥ मसि च प ह्ना ह्ना नात्मिक न
 जानूय नि ह्ना म न ह्ना ना म रु नू यी वि ला वा॥ अं वज्र धर्म डी ४ स्वा हा॥ धम रु धा न १० ट जायः
 या हा अः मसि म ला स र्ग॥ ल ख नी यं प न मा य वज्र वि वि ला॥ अं धी ४ भू कि स्मृ कि वी
 जय सर्वा ह्ना ने य क ला प हा नि नि डी ४ स्वा हा॥ धम रु धा न २१ जयः ल ख क ह्ना नै क च क
 ॥ धन रु रु य जा या र्दः मसि म लाः ल ख क ह्ना य धन ल ख का न ६ य कि या ल ख न क॥ श्रु क न रु सा
 न वा च क॥ यी ० दि य जा म धु थि ल सु निः हा ना क न वि स र्ज नः॥ ०० नि यू थि वा य वि वि ॥ ० ॥

३४

१०

ह अ न म ४ धी व ज स त्वा य॥ ॥ य कि या य द व ना कू ला धि य कि ना य क रू त्वा॥ स मा धि रु य
 ला व ना प्र थ म रु ४ का र्य॥ कि म मा धि रु ला व ना रु जा या य॥ कू ला धि वा स न या य॥ रु जा या थ
 म रु ला धि वा स न कि न ह्ना का र्य॥ ॥ य धा द ह वि धि क्रि या रि ४ य कि मा दि क य कि
 हा कू र्य क॥ लि चो द ह क्रि या या य न प्र कि मा थ य ना या रु क॥ न क र्म या नि र्मः
 ह्ना ध न कि या या रु रु य॥ कू मा नी म वा रु हा का थ हा का य ल रु ल सां का य ल रु क रु सी
 ॥ स्ना न क्रि या न ह्ना ध न या य॥ श्रु ना क नू ला रि नै वा धि वि रु ल स क लि खि रु र्वा ॥

॥ नमो भगवते ॥

रावना ॥ मूल्या क नृणां निवाधिविरात्स कषयानयत्तुलिरिव दवना वीरनिष्पन्नः
षट्पदवायुवर्धनसर्वकथागानन्याचयत् ॥ देवस्याधियमि नृप्यं ध्यात्वा पूर्ववत्तथाक्रमं क
दयादिषु हं जा ४ अं का नंद दृष्ट्वा कंज ॥ वं वीरं न धिस्तु कं ॥ ॥ पवित्रं नृपिथः
चा ५ ला हं जा दिन ॥ ॥ रावना ॥ कुरुपविष्टं नृपिथे दिकं अटिकि धून्वना धिमा
कनकद्वीपं निष्पन्नं कपिमानदवना नीविचिह्नं ॥ कथागनायत्तुलारवत्तुलारवमिदं जगत्
कथागना निश्चला वं निश्चला वमिदं जगत् ॥ अनया गाय वस्तु दुष्टि क नदी कृत्वा नरुमिः

३५

सर्वकथागना नृद्वयक्षयदानयुजा ॥ लास्या घृष्टा वादनस्तुति ॥ धनधनयाय ॥ ॥
अं रुग वन श्री त्यादि ॥ खयापि सर्ववृक्षा वाधिसत्त्वा स्वसर्वग ॥ ॥ रू वृक्ष रुवा वाससा निधि
कर्तुं न हं थ १ ॥ धनवर्जा कृष्णमंडा ॥ आकाशया देव त्वं स्वयां लाहस का सा य दू हा जः
नाला लय दय का प्रकि मा स चि स्म ह ॥ या ज सा धन या य ॥ अं व जी कृष्ण ४ ॥ अं व जी पा म
की ॥ अं व जी स्मृ ह वं ॥ अं व जी व म हा ॥ ॥ या या दि नि नां जन ॥ धन धिथ वा ज सि ला हा आ
दि स्नान या य ॥ ॥ अं नमः ४ स न क वृक्षा नां सर्व वाधि नि वि शु द्धा नां सर्व वि प्री ह न रु दं २ रु द्वा हा

यानि०

आदि

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॥ ॥ धर्मपुत्रं कर्मफलं जायते ॥ दयकं दयाया मरुतवर्जं धियाज जायया ॥
 य ॥ धन १०८ पद्यादि पूजा ॥ ला. द्य. सु. ॥ ॐ वज्रसत्त्व आ ॥ धर्मं शुद्धिं ध्यानयाय ॥ ॐ वज्रं
 वधं हा ॥ वज्रं वधं मूर्धा धियकं य ॥ ६४ थास्यं हा ना कृ ॥ धनवज्रं ना नचामकं हा ना ॥
 मरुतं लेयं सग्वनविषं कं हा का कृ ॥ यकं ॥ ॥ धर्मं लि. वयालि कर्म वज्रि ना नया ॥
 स्वाननं कृ चकं ॥ रावना ॥ ॐ वज्रं हा कृ सग्वं वधिलि कद्वयसमाययकं ॥ अगु कृ वस्त्रयथं
 ॥ धनवर्जं विषं ॥ कर्मयन ॥ ॥ अर्माद्यसिद्धिं रूपं ध्याव नया व. सर्वकर्मि मरुतं हा न कृ विषं

五



अथवा न न॥

[illegible]

✓

स्वयं स्वयं स्वयं ॥ ओं वरु दृष्टि मठि कि लि नि कृ ल्य ॥ ओं अ आ ४ अं अ ४ स्वा हा ॥ ध म नु स्रु
 का अ धि ए न ॥ ॥ ओं अ न्या न्या न ग का स र्व ध र्मा ४ य न न्या न ग का ४ स र्व ध र्मा ४ ॥ अः
 ल्य ना न्य विष्ट ४ स र्व ध र्मा ४ ॥ ओं ॥ आ ४ दं ॥ ध म नु य न यं स्रु का ढ ल ॥ धू ना का ४
 लू रु लु आ दि स क य ॥ ध का या ॥ ॥ रा व ना ॥ क का दू वं ओं जी र्वं का वा जी नि कृ क था
 ग न नि ष्य ना नि नू मि नि वि क्षि क स्रु दि क था ग न र्म य रु रु र्म च य स्रु क था ग न रु द यं षू दं
 का वा दि नि ष्य ना नि रु न स्रु ला नि न स्मि म या नि दृ द्य ॥ ध म नु स्रु का अ ना ध न ॥ ओं अ ४

४ ॥ ध व क व रु स्रु म प य रु म हा म लु ल स्रु ना य दं ॥ ओं अ ४ व रु स्रु ल स्रु म प य रु म हा म लु
 ल स्रु ना य दं ॥ ओं अ ४ न ल व रु स्रु म प य रु म हा म लु ल स्रु ल्य य दं ॥ ओं अ ४ ध र्म व रु स्रु
 रु म प य रु म हा म लु ल स्रु ल्य य दं ॥ ॥ ओं अ ४ क र्म व रु स्रु म प य रु म हा म लु ल स्रु ल्य य
 दं ॥ आ पा ध नि य लो य रु क य ॥ ॥ ऊ ज मि र्वा रु उ मि र्वा व रु स्रु य रु न यं ध म नं मि
 य नां थ थ स्व य ४ कान ल जा य न य रु न या ४ ॥ वा रु ला का रु ड ला हा न न कृ कि लि स्रु जा दं
 क रु व न स्रु म न क ४ ४ ४ ४ ४ ॥ ध म नु य न यं स्रु नि आ वा यी ॥ उ रु न सा ध क र्म ध म नु य न

यकाय ॥ ॥ आकाशसंस्तुताय ॥ मनुष्या ॥ अवजस्तुताय ॥ मन्त्रिकं मथ दूं ॥ ओं दूं आहवाहा ॥ थः
 मनुष्यं मनुष्यं मनुष्यं ॥ वृक्षस्तुताय ॥ वृक्षस्तुताय ॥ वृक्षस्तुताय ॥ वृक्षस्तुताय ॥ वृक्षस्तुताय ॥ वृक्षस्तुताय ॥
 दायकं दूं ॥ धनं लिख ॥ धनं लिख ॥ धनं लिख ॥ धनं लिख ॥ धनं लिख ॥ धनं लिख ॥
 तावत्कर्मिकं मनुष्यं नैकं ॥ यलोचं ॥ धिया ॥ आकाशं याय ॥ धनं १०८ ॥ दयकादं याय ॥
 सुविस्तृतं ॥ आकाशं नाथ ॥ अन्तर्गता ॥ सुविस्तृतं ॥ सुविस्तृतं ॥ सुविस्तृतं ॥ सुविस्तृतं ॥ सुविस्तृतं ॥
 कनविधि ॥ ॥ ० ॥ ॥ ओं नमः श्रीवज्रसंस्तुताय ॥ नकर्मं नकर्मं नकर्मं ॥ नकर्मं नकर्मं नकर्मं ॥

三

3

पुनर्वनमिदम्॥

यदथाया लूयमि स ह दय मरु ची या अ द अ या न ग उ ध म थ न क मा भि स उ कां दि न प्र स र
 ल अ ना र्थ ॥ थ या न पि चा न य न ॥ ॥ रा व ना ॥ क भा ग ग ल क ले च द म धु ल लु न क हा क
 न द य ग र्दि र्ग पि क ल स र्दि र्ग द ॥ व ना वी र्ग द ॥ धू प ॥ य था दि स र्व र्ग व द्या मु पि
 क संप कि ष्टि ता मा या द वा य कु ॥ को क द रि सु दि हा ह को ॥ स म न्वा रु न रु मा व द्या
 अ हा वा दि कू र्ग र्दि ता श्र म् का र्ग ना म व जी द व ना क ल्य या म् र्ग ॥ भि वा ॥ स न र्क या य स
 त्वा र्थ य कि र्ग ना वी उ र्ग र्ग म हा रु न म धि ष्ठा ल क रु म र्ग थ ॥ वा न ॥ अ वा व ना प उ य ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पूजायाय ॥ स्वहृद्दीजनस्मिन्निहानसत्त्वमाह्वय ॥ ओं वज्रं कृष्णदिभ्यः ॥ ऊहं वंहा ॥ सम
यत्नं समयमहं ॥ ॥ यनथडाहृदयेवीजनदवत्वं दयकाथनपूतवनथर्थसयाडा
॥ मनुजापयाय ॥ पुरुषसूक्तकाव ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वलिविय ॥ स
ग्वनविय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
जमाह्वय ॥ प्रकियाय ॥ देवनावीजं गगलदृष्ट ॥ एवना ॥ धूप ॥ समन्वाहृदनेकुसुमवृक्षाज
ह्वादिभ्यः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३५

र्थप्रतिद्वन्द्वना ॥ वीजं हृदये मन्त्राह्वय ॥ अभिष्टाने कर्तुमर्हथ ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
चिरुशान्तिनञ्जकर्वहयाहृदयेकादडायाहनीनहावीजद्विकराजय ॥ ओं वज्रं
कृष्णवीजमसुलमाकर्षय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
मसुलवन्धयव ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ कुरु ॥ धर्मकुलश्रावणकर्षह्वायाय ॥ यायादिनीनाऊने ॥ जाय ॥ पूर्यन्ताय ॥ मन्त्र ॥ काचामकह
गाय ॥ मरुत्य ॥ हृदयाथस्मिन्निवाय ॥ मन्त्रादीवाक्यदयं जजमानेन ॥ यकिजानकाय ॥

मणिमणि

आचार्यन गाला च न न वीजा क न चा या अ द अ या न ग उ हा थ न ॥ यं ला यं मु क ॥ द व या म लः
म क न व र्ज थि र्म जा य ॥ म का क न ॥ ॐ मि वी जा धि ष्ठा न ॥ मी मा ना य न कि या वि धि ॥ वी र थः
न या कि या थ र्थ रू ला ॥ ॐ ॥ ॥ अ न मा गु न व र्ज ध ना य ॥ चै रू रु ना उ रु न सा जा न
क म स ग अ न थ क रु व ना नि य ॥ द य रु उ र्म रू रु ल म य ॥ क ना नि य न द व ना ध
म धा ना व र्ज स ला रू का न वा ना चार्य यू र्वा क क म चै रू ग रू व र्ज धा रु म लु ल वि रू य प्र किः
म्री का न या मि ॥ ॥ थ न जा न क न नि र्म इ स ल व नू या की या या य ॥ क ना य नि ष्ठा ना व ना ॥

४०

क रु श ल रु द्दी र्ज रू का न ल व र्ज क कि न र्म रू नि ला अ क नि ष्ठ रु व न ग ला क रु म् रु न दि र्म
सि धि य था म लु ल रू रु ॥ आ या धू नी ॥ य या दि य जा ॥ अं आ श र्व वी न रू ॥ स लु ल स इ हा न रु
रू य य ॥ क रु मा र्म रू ना न रु ॥ हा थ जा रु ल यः य रु प्र ल म या क रु ॥ अं स र्व क था ग
न यू जा य लु ना या ला न नि र्म ॥ यो मि स र्व क था ग रु व स ला धि ष्ठि क मी नि र्म दि ॥
ॐ ॥ ॐ मि य रु प्र ल म श ॥ ॥ क ना व र्ज ना म रि ष क रु रु रु ना ला य व डि ला गु ला क
ना य था द रु रु था द द ध म रू रू ॥ थ ग था य उ या व स लु ल स इ हा व हा ला न य ॥ ॐ मि स लु

89

[illegible]

एषेन वृद्धा नाना॥

सुबहुनलमयंमष्टुं गाय। अहिकं वज्रमयं रुमि। कद्रुपविमध्यविस्वाकायना॥ अंका
 नसक्तुर्वसिहमा नूदं वृक्षं गीमडायूकं। एवकारं वं नानमात्मानं रावयन्॥ हंका नोह
 वं गऊमा नूदं हस्योमडाधनंः। मात्मानं अश्रात्य ४ रुका न कं रावयन्॥ हंका नोह
 वं अश्रमा नूदं वज्रमडाधनंमा। मात्मानं नलिमक्तुर्वरुका न कं रावयन्॥ हंका नोह
 मयूनमा नूदं ध्यानमडाधनंमात्मानं अमिना रुका न कं रावयन्॥ हंका नोह वं गऊमा नूदं
 अरुयमडाधनंमात्मानं अभायसिद्धिरुका न कं रावयन्॥ ॥ अ. पा. धू. नि. ला. ॥ पूजा वृत्ति॥ ०॥

४२

२६६ रावना॥ अंका नूदं वृक्षं दिव्यं अका न जं वधूवनी दलुखराव हंका न जं दार्ष्टिकः
 यद्रदनं वृक्ष स्नानसत्वं स्वद्वीजदिन हसि। कं विरावा ४॥ ॥ धू. नि. ला. ॥ धीषक्त
 हं लः रा. विधिर्थपूजा दः कृति॥ ॥ जायमक्तु॥ अंनम ४ सर्व वृक्ष वाधिसत्वा नी आ ४ क
 जावलित्वादा॥ अं स हं कू दः॥ गथा॥ अं सर्व कथा गमसि हिक वक्ति दीप २ ध
 मं धा नुगे हं स्वादा॥ स्त्रीमाला श्रय॥ ० ॥ यनाय रावना॥ कथार्थका नात्यनी यरा स्वययना
 यं अनिका धयना कां समयसत्वं विरावा॥ कत्समय स्नानसत्वं स्वद्वीजकी न हानीः समयसः

ॐ नमः शिवाय ॥

तं रूवि राय ॥ ॥ आया धनि ला ला विधि थं पूजा ॥ यं ला यरु न ॥ जाय नरु ॥ अं आ ॥ व
ऊ क रुः व ऊ य रा का धि नि ष्ठ यं स्वा हा ॥ ऊ स रूं व जा धि ष्ठा न ॥ ० ॥ ध ऊ ला व ना ॥ क थाः
सि का न ऊं सि रूं अ का न ऊं अ य ना कि रूं ग का न ऊं ग नू रूं य का न ऊं य रूं अ का न
ऊं द य रूं अ का न ऊं वि ष्ठ व ऊं व ष रूं रूं का न ऊं व ऊं नां का न ऊं न लूं रूं का न ऊं ४३
रूं सा या थ कि रूं स म य रूं लूं वि रा य ॥ न स म य रूं न स लूं स रूं द्दी ऊ की न ला नी न स म य रूं लूं
वि रा य ॥ ॥ पूर्व रूं वि धि थं पूजा ॥ जायः म रु ॥ अं आ ॥ व ऊ ध ऊ व नि ऊ या रूं नी स्वा हा ॥ ० ॥

ॐ नमः शिवाय ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ अथ की ल न वि धि सा रूं ॥ प्रि स मा धि धा ना न रूं म लूं ल रूं मि य रूं
दि रि न व की रूं रूं न म लूं ल रूं मि रूं स रूं स न लूं ला धि य कि म रुं ला धि य कि म रुं ला धि य कि म रुं ला धि य कि म रुं
व ना व ऊं स रूं न य न ॥ य रूं दि रि ॥ य रूं यि ला रूं द रूं न रूं मि य रूं रूं वि धि ॥ ॥
न ना म लूं ल रूं मि म ध नि ष्ठ य रूं मि सा रि स रूं न ॥ की ल न रा व ना ॥ ॥ अ टि मि धू
न ना न रूं नं जा न न नि रूं रूं ॥ वि ष्ठ व जा रि रूं का व कि न रूं ऊ क ल रूं व नि स रूं ॥ नि
स ध क स रूं रूं य व ऊ या को न व ऊ रूं लूं व ऊ स रूं ला वि ना न म ध रूं क ल रूं रूं रूं क ल

विष्णु क्लीशमयिरुमिन्विता वागमध्वजटिनिवजसत्तनूयालयनावृष्टौलाकविज
 यापनक्षमोवज्रकंकात्राविष्णुकसूर्यसूर्येनवकालिनापीज्जालिंदवनक्षयनाकुम्भक
 ध्वनकल्याणानववत्सवीचिसं चयःकवलयनिवनिखिलजगदिद्यावृथानिः
 नीलेयीकहुविमःमूलसद्यनः वारुवकुशयादुष्काकटललजिकः४प्रतिमूर्खः
 सूर्यरंगकटिलनकवर्द्धलदिनः४वन्मूडाललाटसूर्यचकपालमालागलावर्द्धविनद
 क्षमिज४जलीरुषक्ष४समूहमूललिरुचवायुवमोम्वानीलानललिभाक्षजालकपि
 वि तल्ला नध नू

लकुकलसुककादिनागवाजाकुरुमलुलवजवजयध्वमिक्तगार्थीवजमूर्ष्टिद्वयपृष्ठलग्न
 कनिष्ठिकाद्वयंशृखलिकं वज्रनिद्वयपृष्ठमिमिकेलाकसूदयास्यारुप्रह्लासमायनक्षयक
 गार्थीःजुकक्षपाक्षेवामार्थीकपा लखदाकंदक्षानोगकुरुकावमखनदिदिग्मुखः४स्व
 रुद्रकुरुकावानुप्रसक्तनल्लिरिः दक्षदिगविद्यान्जुक्षपाकुरुकावस्तुजिगदक्षदिगः
 काधषसमर्थयगा ॥जुकर्षक्षपायादि॥धूप॥निजाऊन॥ह्वानासकुत्तान॥नकवद्यनरवाः
 लसपाय॥कीर्लंयजशाकप्रकादिठगुलिसथून॥क्षीकाप्रकागायजुकुरुकुखीनकायलद्यायः॥

कि०

पं ली घं तु न॥ आयः न॥ ज्ञायं म॥ तु॥

यन्मायूर्वन्ति सः मायः किदिगसं

गलेयनिवानकीलयद्वन्द्वम्॥

नृनं रुद्राङ्कीलयश्च सर्वपापान्

पूष्यादिपूजा॥ पूषा धूय दीपः कृष्णादिः वलिदापयन्तु॥

दीनैर्वइष्टं न्यद्रोन्मगलपनिवाकीलयैर्द्वेष्ट॥ओं घघ. द्वा दय २ स्थादि०॥ पूर्व॥ १ ॥ अविद्या

॥ हूं हूं हूं ॥ वलिया कवी ॥ कभा लख्य यूवादिदि कू की ल

॥ की लं ॥ अं ॥ ४ दं ॥ य मा न का दी न र्व दू षा न् ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

हैं रुटाओं व ऊ की लय व ऊ ध आ ह्य य नि ह रु टां

॥००॥ गिकी सन विधि ॥

॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥

84

नकादि सर्वदूषा नूवना नृपनिवाजा कील्यं रं रुट् ॥ उरुन ॥ २ ॥ अंय ह्ना नकादि सर्व

दृष्टान् वज्रान् सयजिवा नो कीलथैरुफट् ॥ पश्चिम ॥ ३ ॥ अं यदमाककादि सर्वदृष्टान्

अमास्यजिवा नान्की लयं रुं

रुद्र॥ यक्रि॥ ४ ॥ अं अचलायि सर्वदृष्टान्शः

गो नृपानवा न कोलयद्रुद्रा
नृपानवा न कोलयद्रुद्रा

श्रुत्वा ॥ ५ ॥ अकारं नकारं ककारं च ध्वनिं सवद्वृत्तं नवः
॥ ६ ॥ अकारं नकारं ककारं च ध्वनिं सवद्वृत्तं नवः

होसयनिवा नान्कालय द्रष्टु
नाशयती नशयदंरु ॥ वाशयती

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वाजानुशास्त्रं कुरुक्षेत्रे वाचस्पत्य

[illegible]

शंकरुट् ॥ ॐ नमः ॥ ८ ॥ अं उषीष चक्रवर्तिनादि सर्वदृष्टान् वस्त्रास्यपिवाजाकील
 शंकरुट् ॥ ॐ नमः ॥ ९ ॥ अं अथः स्रक्तजाना सर्वदृष्टान् यथीदवनास्यपिवाजाकीलयः
 शंकरुट् ॥ अर्धः ॥ १० ॥ ॐ नमः ॥ लनयुजाविधिः ॥

४६

२

२५ अं नमः ॥

शंकरुट् ॥ अं नमः ॥ ११ ॥ अं नमः ॥ १२ ॥ अं नमः ॥ १३ ॥ अं नमः ॥ १४ ॥ अं नमः ॥ १५ ॥ अं नमः ॥ १६ ॥ अं नमः ॥ १७ ॥ अं नमः ॥ १८ ॥ अं नमः ॥ १९ ॥ अं नमः ॥ २० ॥ अं नमः ॥ २१ ॥ अं नमः ॥ २२ ॥ अं नमः ॥ २३ ॥ अं नमः ॥ २४ ॥ अं नमः ॥ २५ ॥ अं नमः ॥ २६ ॥ अं नमः ॥ २७ ॥ अं नमः ॥ २८ ॥ अं नमः ॥ २९ ॥ अं नमः ॥ ३० ॥ अं नमः ॥ ३१ ॥ अं नमः ॥ ३२ ॥ अं नमः ॥ ३३ ॥ अं नमः ॥ ३४ ॥ अं नमः ॥ ३५ ॥ अं नमः ॥ ३६ ॥ अं नमः ॥ ३७ ॥ अं नमः ॥ ३८ ॥ अं नमः ॥ ३९ ॥ अं नमः ॥ ४० ॥ अं नमः ॥ ४१ ॥ अं नमः ॥ ४२ ॥ अं नमः ॥ ४३ ॥ अं नमः ॥ ४४ ॥ अं नमः ॥ ४५ ॥ अं नमः ॥ ४६ ॥ अं नमः ॥ ४७ ॥ अं नमः ॥ ४८ ॥ अं नमः ॥ ४९ ॥ अं नमः ॥ ५० ॥ अं नमः ॥ ५१ ॥ अं नमः ॥ ५२ ॥ अं नमः ॥ ५३ ॥ अं नमः ॥ ५४ ॥ अं नमः ॥ ५५ ॥ अं नमः ॥ ५६ ॥ अं नमः ॥ ५७ ॥ अं नमः ॥ ५८ ॥ अं नमः ॥ ५९ ॥ अं नमः ॥ ६० ॥ अं नमः ॥ ६१ ॥ अं नमः ॥ ६२ ॥ अं नमः ॥ ६३ ॥ अं नमः ॥ ६४ ॥ अं नमः ॥ ६५ ॥ अं नमः ॥ ६६ ॥ अं नमः ॥ ६७ ॥ अं नमः ॥ ६८ ॥ अं नमः ॥ ६९ ॥ अं नमः ॥ ७० ॥ अं नमः ॥ ७१ ॥ अं नमः ॥ ७२ ॥ अं नमः ॥ ७३ ॥ अं नमः ॥ ७४ ॥ अं नमः ॥ ७५ ॥ अं नमः ॥ ७६ ॥ अं नमः ॥ ७७ ॥ अं नमः ॥ ७८ ॥ अं नमः ॥ ७९ ॥ अं नमः ॥ ८० ॥ अं नमः ॥ ८१ ॥ अं नमः ॥ ८२ ॥ अं नमः ॥ ८३ ॥ अं नमः ॥ ८४ ॥ अं नमः ॥ ८५ ॥ अं नमः ॥ ८६ ॥ अं नमः ॥ ८७ ॥ अं नमः ॥ ८८ ॥ अं नमः ॥ ८९ ॥ अं नमः ॥ ९० ॥ अं नमः ॥ ९१ ॥ अं नमः ॥ ९२ ॥ अं नमः ॥ ९३ ॥ अं नमः ॥ ९४ ॥ अं नमः ॥ ९५ ॥ अं नमः ॥ ९६ ॥ अं नमः ॥ ९७ ॥ अं नमः ॥ ९८ ॥ अं नमः ॥ ९९ ॥ अं नमः ॥ १०० ॥ अं नमः ॥

लाये ४५ विचरन मधुलाधियनिमा ला ॥ या यादि प्राकृष्टादिं यं चाय हाव पूजा ॥ थ कालि
 न स्त्रीपाक्षल जान के स्या ल ॥ ॥ आचार्य च ४४ था मी धूय या च ॥ ॥ श्रीरुगवन अम
 क विद्या ना ज न मा रु क क रु मि ॥ ॥ कृमि क ना थ य नि क क क रू ला त्त कं मि ध्या ना मे न
 की या य यूष्मा की य ऊ ना य व क ॥ ॥ भ रू क स्य रुग व यु सा दं क रु म हं सि य था दि स व
 वृद्धा नां रु वि म स्य नि षि ना सा या द व्या य था कू को क ह रि षि न ॥ हा कू ना अरु स स क रं
 ना थ रू ला प य्या दि का ॥ मान् गृहान अम क स्या र्था य वा धि स त्व य वृद्ध य सम न्ना रु ज रु मा

वृद्धा जग च क क्रिया रु दा रु ल म्ब वा धि स त्वा ॥ य या चा ना म रु द व ना द व ना ला क या ला
 ॥ रु का र्त्त वा धि सा स ना रि न ना स त्वा ॥ य र्क वि द्रु ज व कू म अम का र्त्त स हा व जी य नि षा
 वि धि स र्ग ना क वि ष्या मि ज गु न ॥ ॥ ४५ थ ४६ कृप चा न न अ न की या म या दा य
 स त्ति या स क त्ति न म धु ल स र्व मा ॥ ॥ य नि रु या ता नि धी क रु म हं थ ४७ धा व ३॥ ॥
 अ य म स रु ली ज ना स रु ली जी वि रं च म स म र्थ स र्व द वा नी रु वि ना र्त्त न र्त्त हा य ॥ अ व व रु
 रु वि ष्या मि वा धि वि रु क व न स र्ग थ ग न कू ला य रि स मा य स्या न र्त्त हा य ॥ अ य म दि व

॥ आनकमः नादि संद ॥

सदृशः यद्वाभयनिजूरुनसैनियागारुवदृशः सर्ववृद्धनिमकनाम् ॥ ३ ॥ वजीक
आदि॥ यायादि॥ नीजीकेन॥ जह्वं वहा॥ विम्वयवधायक॥ सिधुः स्वचः आदि॥ लजीजिह्व
धु० पीपिमविच० मूँक्याय॥ ॥ खपसाउल॥ यमिवा दउस इविकगाजय॥
स्नान॥ यं वासुक्त॥ यचय॥ व॥ ॥ यंचवल्क॥ यंचग॥ यंचग॥ ॥ कर्क॥ कर्क॥ कर्क॥
ल॥ खक॥ यस्नान॥ यार्क॥ अमि॥ गारुचि॥ नक॥ यम॥ क॥ यंचवि॥ क॥ क॥ स्त्री॥ यार्क॥ क॥ यार्क॥
॥ ॥ यन्म॥ क॥ ल॥ स॥ क॥ ल॥ स॥ त्वहि॥ र्क॥ न॥ क॥ स॥ वृद्ध॥ स॥ दोष॥ नहि॥ क॥ स॥ वि॥ वृद्ध॥ वृद्ध॥ ॥ ॥

संग नून विरा वात्मकस्य कन्मनी लैरु वरु कय न मा रिष केक्ष ॥ थन नानि च दन ॥ स्वमि
वास्तु न ॥ ॥ रु नै अक्रो स्य चिं क नील वरु कर्ष स्तान या क क ॥ य नै ग लै स न न न स
नयू कि कस्य धर्म स्य क न क थि ॥ कस्य नि नू रु न स्य ला क रु य प्र कि हि क स्य नि न
त्म क स्य कन्मनी लैरु वरु कयः ॥ न मा रिष केक्ष ॥ य थ हि जा क मा रु न एा दि ॥ थ
नययू पा क ल रु वरु वि म ॥ अं वा अ की इ ट क व च वरु स्वा हा ॥ ग वि य ॥ अं दि वा वो स स स्वा
हा ॥ अ य रु ल आ दि स्वा ना व व रु ग ॥ रु ग कि ज अ ज ग व य ग ल सिं ध न रु य ॥ अ अ कि

लक रुख हा हा ॥ गोला च नं कि च क ॥ पृष्ठा दि य जा ॥ ला घं मु क ॥ व जा व हा म डो हा ना
 क न ॥ ० ॥ थ न व ज थि य क ॥ ज ॥ ना उ त ॥ आ ॥ क थ स ॥ दं ॥ नू र व ड ॥ की ॥ मि र वा नि ग
 उ स ॥ जं ॥ क स व न नि या स ॥ रं ॥ ॥ क स स ॥ नं ॥ क उ स ॥ र्क ॥ क या ल स ॥ स ॥ क रू स
 ॥ स के कि न थि यो रा व या य ॥ थ ॥ ॥ वी जा क व हा दे व या क अ धि ष्ठा न या य ॥ ॥
 म उ म क ना र्वा सूर्य च नु क ना त्या दि क स व क न च कृ षा नू प का लि क ॥ थ न चि रु का न हा
 थ प जा या च क ॥ ख लि वा क य उ र्प का य अं ऊ न ची रु का न ल ड क्रा य ॥ इ ष्टि कं क ॥ द ड या

४५

३

मि र वा स च नु सूर्य हा ल य ॥ अं ऊ न का या व य ल क लि स का या ड ॥ लू या हा ला की अ हान नू र्मि
 मो व का हा ल य ॥ अं ऊ न ड लं हा ड या य ॥ ॥ म क ॥ अ हान नू य ट लं व ल व य पी क डि ने रु व
 हा ला का व य ना ऊ न य थ लो क ॥ ॥ मि मि ली ॥ अं व क रू स म क व कृ वि ष्व ध न स्वा हा ॥
 अं ऊ न ड ल क ॥ द ड या मि र वा नि ॥ ॥ गे उ र्मि म क क न ग ड दि य व कृ ष दं ॥ अं हान व कृ ष
 रं ॥ क रू क न ॥ अं प ह व कृ ष रं ॥ अं व ज व कृ ष रं ॥ व ज व चि न मि र वा नि ष स व ल ॥ अं हान व
 ऊ व कृ ष रं क नू रं ॥ ॥ हान व कृ अ धि ष्ठा न ॥ ॥ थ न ह ल क या अ र्थ क न ॥ कि हा ड या र्चि ना ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१८७६ हिमालय सर्वस्व विनिर्णय कृत कृष्णमया ॥

॥ ह्रीं श्रीं नमः कृष्णाय नमः ॥

नङ्गिप्ररुकिनः शिष्यसकलैः समस्तपालियनिर्लङ्गमानयनिर्लङ्गलपलस्यनः कनूः
॥ दृष्टिनस्ययाडविज्ञयमाले ॥ ॥ विम्वक्ष्णोदयोनाजाः जगद्वद्वत् ॥ ॥ श्रीसिंहन

दक्षिणा ४॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥

॥ हूं ॐ नमो भगवते ॥

॥विष्णुः॥ नोदया नो जाः ऊगदृष्टः ॥ श्रीसिंह न
स्वः ॥ नो ध्यागुदध्या नो जाया रुगथः ॥ श्री

हृत्तगर्गनः कर्णमयनभातः थर्थमिष्टयनिस्तुः कलपालसनः कर्णमदृष्टिनः स्वसंवि
 ज्ञायमालः ॥ ॥ गार्गाविनिर्गकनस्तिरिः सर्वदिग्ग्लोकधामुत्सनाम् ॥ ॥ हं ॥

॥ माया विनिर्गक जेसि रि ४ सर्वदिगुला कथा मुख ना ॥

100

8

ॐ नमः शिवाय ॥ कूलपालया मिखा निगुलिया कज नस्मि नंग थु मिदि गसं प्र का मया कः थर्थ क
 लया लया दृष्टी नः पूर्व दक्षिणः पश्चिमः उरु नः अग्नि नेम रा वायु ॐ नमः शिवाय ॥
 क मिगु दी ग ही कूलपालया दृष्टी नः प्र का मया कः थर्थ क नू क्षा दृष्टि न या डा सा
 सवि श्रय मा ल ॥ ॥ रूप न ॥ म म्व नः सर्व सत्त्व लोक या क दिव्य चक्र न या डा
 कूलपाल स न स सवि श्रय कः थर्थ क ज्ञा मान य निरु म् दृष्टि सा या डा क न ध न र्ग नान र्ग
 पति श्रय श्रय न ग या द कूलपाल स न क नू क्षा दृष्टि सा सवि श्रय मा ल ॥ ॥

श्रीनयकाभ्यामर्थकनूष्णदृष्टिगयाउसा

सम्भवः सर्वसत्त्वलोकायां कैदिव्यचक्रगयाऽऽः

मानयनिरुद्धदृष्टिं शयाडाऊनधनसंगानसं

नकजूष्मदृष्टिंसाभविश्यायमाला ० ॥

11

कर्मकारणम्॥

ॐ मंगलाग्नेय स्वाहा ॥ ॥ ॐ किं दृष्टि दान विधीक्षा ० ॥ अथ धृक् नमधूपासनया
कः अगलक्षिदलसः धलकस्ति नस्य पूजाया दाजः पूर्णा दज चन्द्रसूर्य त्वं वा नयाजः
धनसूवर्णयाथा लसदेष्टु स्यं धलकस्ति स्वधन ॥ ॥ ॐ श्रीः स्वाहा ॥ नाचा
यक ॥ ॐ श्रीः सर्वकथागकधृ नमधूपासनं दू रूट् स्वाहा ॥ पाल ३ नक ॥ ना
चायक ॥ ॐ सर्वदेवनाचिनामृगध्वनस्वाहा ॥ इ इ कां क ॥ दज या नाचाया थलसं इ इ स
लिधलकस्ति लफकस्यं कलं खवा १ कस्यं क्वा य ॥ यं लां द्यं मुक्ता ॥ वज्रां वक्षामूपासनः क्षा ना

कनविहर्जन ॥ ॥ ॐ निजाककर्म ॥ ० ॥ चिपाल्वाकूकयभावाजंगुषाषि ॥
स्वीकृष्टक ॥ एवनागदन्वाचार्यस्वद्विज्जागोदवगानीनामाकनंविणवायः
दीपादीयस्कंधकनद्विभिना ॥ सर्वाकाक्षधुपनिपूर्वविणवायपूतनागः
एवस्वद्विदयानामाकनंनिष्ठा ॥ र्यदवगाद्वदयपर्वेष्टकथेवस्ववक्षसंहनः
एदिर्ककृत्वागाज्जकर्मक्षःपाद्यादिनीनाऊनगाजंजंजंखंडं ॥ धमचुनयक्षमनय
कगवययक्षपलपवगधर्कधर्लखनस्तानयाकक ॥ नस्याकचकननद्याल्लखान

मसवयक ॥ लदयायनिरुवांठरुलसा कस्तनसहाय ॥ अं सर्वकथागनकायविहोष
नस्वाहा ॥ यववल्कनः कस्तनसंगय ॥ वनाचनविं कल्ले हा लघनस्नानयानक ॥ ॥
यसत्त्वचनवचधर्मवजीम ॥ डाऊननसदिकस्यविषयकस्य वनाचनस्यरु
वइहरेविनाहाकस्य नमः ॥ लंरुवरु ॥ अतिकर्नकवाय ॥ कस्तनकना ॥ अं वरु
सत्त्वआहाथनगोलोचनैकिक ॥ अं आहकिंलकरुषहाखाहा ॥ अं आहअमूकवजीरु
वनामकथागनकरु वस्वा ॥ दयाया कृनामरुलजगुलिनामकय ॥ दयायानूग्वंउसवज

५२

थियकं नः दयायामर्कजायधन १०८ ॥ यं लार्थं मुक्त ॥ ॥ ॐ निनामा कवचः ॥ ० ॥
अं उपन्नदागतयस्वाहा ॥ ॥ कनकरुलप्रासनार्थप्रणिमास्नानैकावयक्त ॥ थलिरुल
प्राधानक्रिया ॥ अमाद्यसिद्धि ॥ विं कल्ले हा लघनस्नानयानक ॥ ॥ गथाग ॥ श्री
वरुवरुवयक्तवरुपाविस ॥ मूठिनाचसदिकस्य अमाद्यसिद्धिं यन्मङ्गलं दि
नकवनार्थसिद्धिं नमंगलं रुवरु ॥ अतिकर्नकवाय ॥ थनकाइपाकवस्तुविय ॥ अं दिः
यवाससस्वाहा ॥ अं वाध ॥ ईदृकवचवस्तुस्वाहा ॥ गं दयक ॥ थनवरुनालनामकरु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नायगाथनलि नाना ससारुलनं का आदिं लं रु लु स क म द क सा शि प कि नि स क स्य ॥
लं ख न हा स्य ॥ ध न या य ॥ अं आ ॥ सर्व स र्वा ध न रू रू ॥ थ न च द स र्वा य ली द आ दि रु
वा क स न क ॥ अ म सि आ दि य ॥ अ न ॥ अं स मा धि रू लं स र्वा कि न य रू पी न न श्र
स्वा हा ॥ अं अं स्वा हा ॥ इ इ का क ॥ ना वा य क ॥ य पू षा दि य ॥ जा ॥ ला य रू रु ॥ ॥
अं स यो रू न य स्वा हा ॥ ॥ रू कि रू ल या स न वि धि ॥ ० ॥ न क ॥ अ न पा स ना
थं यु कि मा स्ता नं का न य रू ॥ य नै ग रू लं त्या दि ॥ ॥ थ न व रु का ल ना म क रू ना य ॥ य कि न

५३

७

रु दि ग ना य ॥ अ वि य ॥ ना ना रु न ध वि य ॥ अं स र्वा व न ध रू रू रू स्वा हा ॥ थ न स रू व रू या
थ न स रु जा का स्यं ना ना वं रु क स्य दि ग ना या ॥ लं ख न हा स्य ॥ ध न या य ॥ वा क ॥ अं
स म क व रू ना नं अं अं व रू द रू ॥ क जा व रू नं द रू स्वा हा ॥ अं आ ॥ रू स्वा हा ॥ थ नं लि आ
गं रु य रु ना या थं ना वा य ॥ क ॥ अं अं स्वा हा ॥ जा न क वा क ॥ अं पा षा य न
म ॥ अं गु ला ॥ अं अ पा ना य न म ॥ द थ ला ॥ अं स मा ना य न म ॥ वा ला ॥ अं दा ना य न
म ॥ वि ला ॥ अं वा ना य न म ॥ क ला ॥ अं दि वा न स मा धि ध्वा न पी न न स्वा हा ॥ क जा य

अनेपासेन॥

लेकायावनकाहाडायाडावाकासकय॥थमानकदअस्वयाडा॥कलेखकयवपूयले
खनहायस्वलाक॥थनस्वीमालकःग्वयग्मालदाहाजय॥ ॥थनऊनकक्रिया॥ ० ॥
कथूखयक्रिया॥कूदूयाकया॥ ॥लेविय॥अंश्रादिब्यवाससस्वाहा॥हीखदचन
नकिचके॥चकामधिपपादक॥ ॥स्यवादि॥कखरुजादाहालेप॥पूयादिपूजा॥
लाद्यंमुक्त॥ ॥थनकथूघयक्रिया॥ ० ॥कक४उपनयनविधिंकूर्याक॥देवगाह
दिचन्द्र॥थनऊऊमानंकस्वानकासीहाथजालपंचान॥ ॥अंसहासुरखजेंद्वंहाहा॥

५४

८

उपनयन

सूचकस्त्वमिनिन्यस्यसर्वदेवकारुथागरुनस्मिन्वक्षसंरुनक्षपर्वकनद्विअंऊलि
वध्वविष्णुपयक॥महासुरखमहाजाग॥विर्वसर्वऊगत्यकिंसर्वसत्वमनावापिःसर्वस
द्विदिल्लिगध्वासर्वसत्वपिना॥ ॥वेवःकामागुसमयाणिना॥कनसत्यनमनाथः
कामात्वयवियूजयन॥धर्म॥ ॥धकानधिष्ठानात्समयस्मनक्षदयि॥कययास
र्वसत्वानीकून्धीसर्वसिद्धय॥स्वानपासलदवयाकहालेक॥ ॥अंयकिवागुत्वाः
हा॥ ॥येलाद्यमुक्त॥ ॥रूकिउपनयनक्रिया॥ ० ॥कक४पूजाकननार्थप

५५

ॐ
अ
ॐ

किमास्तानेका जयगुणथनचूठाकर्षुयाकलाकध्वनचिद्रुद्धीस्तानयाकक॥नेजखभा
गाथागायनमर्कलंकमलपाधिसवजकीध्वनकायध्वपवनराधिरयस्यलाक॥लाक
ध्वनस्यसुगनस्यसुखत्मकस्यः कर्त्तृगर्लरुचक्रुपनमारुधकशाथनस्यअह
खालवाजभाषादोलवयावका॥ ॥कंकाभक्षसुवर्षुर्नरावयव॥अंस्वावजल
विष्ठाधनःसुर्वाहानवानानुद्धय२दंस्वाहा॥थनलमेल्ननक्रस्योलेखदलव
याय॥अंभमक्षधिकनक्षस्वाहा॥थनस्तानयाककनलसंरुवचिद्रुद्धीधनस्ताना॥

५५

२

क२

यत्तर्गलसुखकस्यजिनपुनसत्कुरुनाचववमहासुखधिरस्यःशीनलसंरुवजि
नस्यनिष्ठाधिरस्यकर्त्तृगर्लरुचक्रुपनमारुधकशा॥थनवजगावामनर्दंभाय॥रु
लकंक्रमनसाउक्षस्वस्तिवा॥ या रावयादाडाकृत्कनसकवक॥युर्गाजना॥अं
जलनडलक॥अंस्ववर्षुकि॥ लकरुषस्वाहा॥नानोरुनक्षवियं॥अंस्वा
वनक्षरुषस्वाहा॥वाकुरुर्लिनिकायक॥ ॥मकु॥अंकावलयववृद्धमक
टमलिकनिष्ठाधिर॥००दंनसर्ववृद्धाजीध्वधुर्नमस्तुर्ग॥युष्माकंयुक्तनाथयमक

वृत्तद्वयः

कसूदलु र्नासिक धिरु नां वियगां वज्र नल्लगां ॥ थन उड किं हुअ किं च वास जाकि वडि
थसं सैवल वियगा नील कमान वियगां वन मा न रं रुद्रा वली हुना राअ या य ॥ यथा
दिपूजा ॥ ला दीरु न ॥ क्षमा कया ॥ ॐ स म हा र्ना य स्वा हा ॥ ॐ कि व ना द क्ष वि धिः ॥ ० ॥
अथ वृत्त मा क क्ष मा वरुं क्रिया ॥ ॥ द व सै द क्ष न न वि श्र क ॥ लि हा वि श्र च क ॥ थ
न स लु ल थिल क द व य जा च क ॥ थ का दिन हा थ जा क ल य वान ॥ आ चार्य न दी ० था र्ग म थ
गां ॐ सर्व क था ग क प्र कि मा दि क व नि ४ स्वर हा व वा धि वि रु ल दू पी वि ह्रा य य न ॥ वा धि वि रु ल

५७

११

वात्सर्व व द्वा र्ग ग ना म ना वा धि स त्वा म हा स त्वा र व म ति दि द्य य सि न्नि ४ स्वर हा व नि य
लं व स र्व स त्व क का व र्ग क था ग क स म ना ह्ना न वा धि वि रु मि कि स्म र्ग ॥ क ल यो ल द क्ष न न
वि श्र म्ना ल ध क रु रु मा न द व ॥ या क प्रार्थ या च क ॥ ॥ थ न द अ य जा यो च क ॥
यं ला दीरु न ॥ ॐ सूर्या र्ना य स्वा ॥ हा ॥ क्ष मा क व म रु क र्ण क्ष ॥ ॐ कि व न मा क क्ष मा
वरुं न वि धि ॥ ० ॥ क रु ४ य र्व द व ना म मा वरुं न वि धि ॥ ॥ थ न यि दि या य द रु सा ल
सा र्ग द का य गु न स लु ल द न क म क य जा वि स र्ज न ॥ स्त्री क रु हा क र्ण व ना नी नी रु न लो हा

५८

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गिन नकाः पंचगव्यवियथकि॥ गथनदयकादडायास्तद्रुद्रिहायकः हाकरुदिकाः काय॥
मस्तद्रुद्रिय॥ ॥ थलिवलिविय॥ पीथादियजाः मलुलथिलकिंलीकनः बाकाकनः ख
मायसः विसर्जनः आशिवादि॥ सर्वमाहनिस्तुयः चकयजाः दकः विमर्जनया
यमकथा॥ आगमः कलसाः यंयं॥ कः आदिगुहयकाः ससयाचकः बाकाकनः कोलाः
गलचकः कलखवलिविस्तुय॥ थनदुसलक्रियायादकयहेला॥ वृत्तिदुसलक्रियासमाप
॥ ० ॥ आदो आचार्योदिंस्तानं काचयन्॥ रुथपनयावलिविसर्जनयादथानसंजागद॥

५८

१२

थलिअग्निद्रुलुस्तपनाः यस्तुल्लंकाः नाहायकः नागपाः श्रीलक्ष्मीयकः यकिंसीः वृत्तायअलि
कथागमः कलसाः स्वाशिवलिः आगमः कलसाः महावलिः थनविधिविधानं थस्तपनायाय॥
सूर्योद्योगुव्यादाद्यं पूजाः ललापेगुनमस्तुलवलिवियः पकगव्यकायः
सिधुनः अधुषनाः कलसाः आगमः कलसाः यचकैरुआदिपूजाः आदिगु
हयकाः कालपूजाः कालकाय॥ नदिनमस्तुल॥ क्रिमाधिदगुलियाय॥ कः आधिवा
सनः अग्निस्तपनाः मासाकपूजाः पलीदअपूजाविधित्थं॥ मलुलपूजायाय॥ हंस

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

च नूजाथय ॥ थनव लाश लदाउं हि क्रिया कूसं हय ॥ वूहिम चाक द क साः ल सा सं हय
गुनम मुल द न क वलि वि स र्जन या च क ॥ ॥ थन सी क र्ण ल क र्ण ला व ना ॥ क क ४ स्व
द द य च द र्क अ ४ क न र्ण वि
य स द द या इ ल र्क य कि मा
अ व र्क स ल अ ४ ॥ थ न प द पा व द व या भा ४ व र्क स ल मू डा न थि य क ॥ या या दि नी नी ऊ
न व र्क न वा म क र्ण का य ॥ थ न सी मा ली द उ या ग ल स का षा य क ॥ पू अ क न १ लि वि चा स क

यां न स्वाक कालचिकनया अश्रु इ अ ल सः स्व च कृ ग्व उ या ल वि रु अ दि ग का या अ अश्रु अ
ल क य ना दे अ या नः चिकनका लो रु मा स मा स क य क रु किं ग थ म नु धा व न य उ प ग अं स र्व क
थ ग न का य वि रु अ ध न स्वा हा ग ॥ ॥ थ म नु न स का पा च नः क स क न सः न स्वा क चिकन
वू य ॥ क ल चिकन स स वू या रु ॥ ॥ अ या स क स क न स न य ॥ भो ल कू य कं ॥ न उ हा य
जा ग द किं स न य ॥ नं ग न पा य अ व ल रु स न सः भो उ कू य कं कं स ल र्व मि र्व पि य प क व ल क
न मा उ कू य क ॥ अं वं अं जिं र्वं कं र्वा दि ॥ थ न य च ग न्ध यं चा मृ न य क र ग व पं च व ल क स्त्री या न कं ॥

याशिवाद्दत्तायाम्॥

गमथा॥ यद्गुज्जस्य वनमालाः गीतनस्य यत्पुष्पधूपवनदीपविविक्तगन्धेषु पूजा किं ४ पः
किं सर्मचिमलं गीतं कलसं कलं रुचुं कयं नमो किं षष्ठं ॥ यननलाः लज्जाः किं ह्यः कृदं मयि
यं गुः कर्पूजं सल्लयनं ॥ यननवमं सिं धूजि यमासि दिगं नास्यं वियं ॥ ॐ हिमं वा या
माणा रुनं दमं ४ कां ॐ हि यं तासि लज्जा यमां दिव्यं वा सल्लयनं ॥ आरुन
लवियं ॥ ॐ स वा वनं हारुषं हारुषं ॥ यननं यमां कसिं धूजि यमां ॐ हिमं वा या कमाणी सिधुं न
युयं दं ४ का यं ॥ ॐ दं कलसं वृद्धा नीं धूजि कनमस्तु नः यमां कं पूजना र्थं यमकूटय च कूल

३०

98

[illegible]

प्राणिगुरुहकिपा॥

वीजाकननानालोकधामरुजित्वाअकनिष्ठमुवनंगत्वाकस्मादाकृष्टधीरुल्लोनीनैविकथ
न॥पाःनीःलोःपैलाद्यंमुक॥ ॥कभाधीरुल्लेहंरुदत्वाःयवमरुदंनयालिखित्वाला
जाकनःयवंधीरुल्लेवधयक॥ ॥थनलाहोकरुःस्वस्तिवायाअःनायअकनकस्य
बाललाहोकरुसयोलविहाहोलयःऊनालेपकसपोलविर्भंकयाअखनखिपकः
चिस्तिन॥००दिमूवाकदकसाःउपाध्मरुनबाललजहायमंदमरकासी॥गमथापथक॥
००र्यमाधगकामूडाःहानालोकप्रणकनीःगृहीत्वायासिनायासिःबृद्धकृष्टप्रवर्हिनाःयन

६९

१५

हाननसत्वेनप्रहोपायात्मसुल्लेःकामात्वेयत्रियूजयक॥थनअलिनिर्भायमकु॥अंसव
बृद्धचूडामणिमहावज्राधूषःवधकिष्ठरुदृष्टस्वाहा॥जालहोसांकायाअंवरुहासस
सयमनस्मनस्वाहा॥कभाअग्निप्रदकिष्मा॥यरुमलुलदूयक॥कूलकुर्हिबयूय
॥दूधालथय॥नैयत्यकानस००ीधमकानसःस्वस्तिवायाअःथनकाहर्तुनिः
जाऊनःवजगाववाःमकरुःअलिनिःजाहाताःसग्वनकायःसरुल्लूया॥कृवाक॥००र्यमाः
आगमीमूडाःहानालोकप्रणकनीःगृहीत्वायासिनायासिःबृद्धकृष्टप्रवर्हिनाःयनहान

गोविन्द ह्येति वा॥

नत्वेन प्रहृषाया लसत्सु लं कामाख्यं यन्निपुणं यन्॥ अथ गार्थां द्रव्यकानं चाकस्मिन् वाकं
न द्रव्यकं॥ ॥ अथ १२ अक्षु मसीकं॥ बालसु खी खलं खलु कुलं॥ खिपन रुं न॥ अथ न
वाधन कुर्यात्सु सु सु न॥ च न॥ ॥ जाह्नव यमकुं॥ अदिवा न्न न ध्यान स माधि ध्यान
पीन सखा हा॥ पला धर्म नृ नृ प॥ ॥ ॐ निपाति गुह्य विधि ४॥ ० ॥ अथ अः
गित क्रियाः राव ना॥ अग्नि कृष्टु स स्त्री कृष्टु लं॥ क का अनादि स सिद्धि वृद्ध विम्वर्क ॐ
दय नि मां दृष्टु प्रजा ज काना म सु धा नि मूर्ति ४ सु पा क ली हा ज स ना रु का नि वि भुं ह

६२

१६

अग्नि क्रिया॥

सोम्या यम वा नृ जटा प्रव द्यो॥ कल दत्त मो ली वि वि ण रु न ह॥ ॐ गार्वा ली ला स्य दय
अगणी ४ गार्वा ली का स र्व व न प्र दायिनीः द ह्य कृष्टु प्र ह स म व कं॥ या या दिः अग्ना रु नी
गार्वा ली का स र्व व न प्र दायिनीः द ह्य कृष्टु प्र ह स म व कं॥ या या दिः अग्ना रु नी
॥ ० ॥ क का य नि षा॥ अथ न म लु ल स स्त्री कृष्टु लं॥ क का अनादि स सिद्धि वृद्ध विम्वर्क ॐ
हव ऊं क कि न ह स र्वा नि त्वा अक नि षु रु व नं ग त्वा नृ कृष्टु अनादि स सिद्धि यथा म लु लं

४

दृष्ट्वा आया धनी गायत्र्यादि पूजा ॥ देवता कृतिः यथार्थादि ॥ लाक्षा र्घ्यं १००० ॥ यत्न
 मस्तु लसद् द्वाव द्वाव यथा ॥ अं आ ४ र्वं वी न द्वा ॥ यत्न मस्तु लसद् सर्वं ॥ जजमान न द्वा क जा ॥
 लयं क ॥ पंच प्र नाम या च क ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥
 कयामि ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥
 पूजा पस्तु नाथ आत्मानं निर्यो कयामि ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥
 अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥

६३

१२

ला ॥ ३ ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥
 प्रवर्तय मां ॥ यत्निम ॥ ४ ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥
 अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥
 वक्ति ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥
 प्रमिष्टा दं या क स्वां द्वा ल क ॥ ला व ना ॥ स्व द्वा द्वा क म य र्व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥ अं सर्व कथा ग क व ॥
 आ देवता ग ॥ ग ग न मा यू नि र्दृष्ट्वा ॥ ॥ यत्न स्त्रा न गा था यत्न ग लं हि क क र्ज य न र्ज यः ॥

प्रतिष्ठा॥

[illegible]

58

१८

॥ अक्षयशुभ ॥

य॥ अं सु प्र कि लि क व ऊ स्वा हा ॥ ॥ वृ नि प्र कि सु वि धि ॥ ॥ क न ४ य म् आ धि व ऊ स्वा
वृ द्वा नां य था य रु म हा म रु म मा पि जा न स्म र्था य ख व जी द दा हि म ॥ थ न रा व ना ॥ अं आ ४ नः
त स भ व नू पि नं ह न स त्व न की ॥ रु ग न रु लू क था ग न द वी रि ४ कू म न रि धि क मान
नू प व जा रि ४ नू य मा नै म ग ल ॥ गी रं ला व य नू ॥ थ न स्त्रा न ॥ य त्म ग लं हि क क नै प न
मै प वि र्ण यू थ कि या क न क्ष मा र्ये ऊ ना रि यू क ॥ क न ज ग उ रु ग वा न मू नि स्म र्त्ति र्ग त्म गः
लं रु व रु प न मा रि ष कं ४ ॥ य था हि जा क मा न न रा दि ॥ म कू टा रि ष क वि य ॥ न त्व स म्भ व नू

वज्ररिषक॥

पिनं नत्स रा वं पापं म कूटारि ख कविय ॥ अं वज्र धा त्वं ध्वनी अरिषि चरुं ॥ म ॥ अं स त्व
वज्रि अरिषि चरुं ॥ पूर्व ॥ अं न त्व वज्रि अरिषि चरुं ॥ द किं ॥ अं धर्म वज्रि अरिषि चरुं ॥
पविम ॥ अं कर्म वज्रि अरिषि चरुं ॥ अ ॥ उरु ॥ अरिषि चरुं म हा वज्रि धा कं न म सु क
यूष्मा कं पूजना र्था य म कूटय व ॥ कू ला रु वं ॥ अं अ ॥ वज्र म कू टारि ष क च रुं सु कः
त्व म रुं ॥ ॐ ह्य द कारि ख क ॥ अं वज्र रु ध्य हा ॥ ॐ कि म कू टारि ष क विधि ॥ ॥ वज्रा
रि ष क विद्य ॥ द उ या क थू क या नू ग्व उ थिय क विद्य ॥ अं रुं ॥ अं रुं ॥ ख ॥ अ ॥ अरि ष क त्व म सि

६५

१९

वज्ररिषक॥
वज्ररिषक॥

वृद्धे वज्रा रिष क रु ॥ ॐ द न त्स र्व वृ द्धा नाः ग रु वज्र सु सि द्ध य ॥ ॐ नि वज्रा रि ष क ॥ ॥
अथ दृष्ट थ मं दृ ष्ठा रि ष क विद्य ॥ अं वज्रा धिय कि त्वा म रि षिं चा मि कि ष्ट वज्र स म य त्वं हा
वज्र दृष्ट न कि रु अ ॥ ग रु हा ॥ ना सि म या रु ग व न म यि स नि दि ना रु व ॥ ॐ नि य
॥ रि ष क ॥ ॥ लं च र्ग कि च रु ॥ अं वज्र स त्वा मे रि षिं वा सि वज्र ना मा रि ष क
॥ द उ या ना म सा या नि च रु ॥ ॥ य कि मा दि द व ना नी स वज्र वज्र दृष्ट क न धु र्ग रु न
मू डा यी लि जी ना रि न र्य वि हा वा ॥ थ न प्र कि मा दि द व ना या वज्र दृष्ट जा दा ला हा रुः

आचार्यो नमः ॥

ज्ञान आलिंगन मद्राया कः लार्थ ऊडास चाद व ऊ खडास कः खडास चाद च ल ऊडास कः ॥ थ
थ आलिंग लम अरु न य या काः ला व ना ॥ क क ४ सू प्र कि षि क व ऊ स्वा हा ॥ ॥ ०० कि आ चा या
रिष क ४ ॥ ० ॥ क द न च क ४ म र्ति व ऊ स त्व त्व द्दी ऊ कि न ल नी र्गः स वि या वे
ना च न द्रा न प्र व ल द्दी र्ग म हा स ख म न रु य व ऊ य आ ल्या मू क ष्ट वा धि चि रः
ख नू पा ४ प्र कि मा दि द व ना या मू ख प्र वि र्ग कि चि न थ क ॥ ०० कि गु अ रि ष क ४ ॥ ० ॥ क कः
रु न व ऊ स त्व ना य नी क बा ४ स मा य ना या ४ प्र कि मा दि द व ना याः स रु जा न द म य त्व म धि म

५३

20

यथैक ॥ ॥ पञ्चमहाभूतानि ॥ ० ॥ नदनूत्वं वज्रसत्त्वप्रकिमादिकचतुर्थीषस
नूपापेकिमादिदवतापुद्गिनवासानाः यनसमस्तसुखमयः ॥ नूत्वाकनूत्वाकिनेकन
ससमाधिर्मवक ॥ चतुर्थीष
वध्वा ॥ ऊऊमाननेहाथऊऊले
त्यादिविज्ञानादनादिनिधनपञ्चमहावज्रसमयसत्त्ववज्रसत्त्वोद्योसिद्धयसुवार्त्तसाम
हसिद्धिमाह ॥ धर्मादिदवता ॥ सर्ववज्रधनीनाजासिद्धिमपनमाकृजनिर्दोषसाठवक

अथपि सर्वनामान्नागिनः॥ कल्लनसिद्धिभरुगवान्महाजातामहाजनः॥ अथ कल्लुः
 द्वधर्मोत्ता आदिमकसुथागकशासमकरुद्रसर्वात्मा वाधिसत्वप्रसिद्धयामर्वात्माः
 महासिद्धिः सादेष्टव्यादिदव कासिद्धिवरुमहाकर्षः वरुगर्हयकिर्मेम॥ सर्व
 सत्वमनोव्याधिः सर्वसत्वद्विद्वि र्कनक्षसर्वसत्वयिनायेव कामागुसमयाधिः
 ना॥ यनसत्यनसकृद्धान् यहापायात्मसुल्लं कनसत्यनमनार्थः कामात्त्वपिनिधूवयका॥
 ॥ ॥ यनप्रकिष्टोदकक्षमाहा १८ ४ कयकः प्रकिष्टोदकं कयकः प्रकिष्टोदका कयको

६९

२९

ॐ
ॐ
ॐ

पूष्यन्याहा॥ यंलायंमुक्त॥ शानाकनधाले ३ यउथ॥ ० ॥ यनकर्मवजिहाथयूजायायः
 शारुल आदिंलडाहाय॥ आचार्ययावजयेष्टथिस्यः कर्मवजिया शारुलीथिस्यः ऊजमानं
 यनिसकलस्यनथिस्य॥ यिहाला॥ ॥ यनययनप्रकिमाकिष्टय
 कल्यकल्यसरुसुकी॥ ॥ कल्यमखः निकल्यमखः कल्यमखः सुकल्य
 कल्यवृक्षसिमादभालीः सदासर्वकालं कलयालथिर्नविश्रयमाल॥ १ ॥ नकलुद
 वनासर्वक्रियमिजलवायवः॥ ॥ सयस्वकादिदवला कयनिर्मेनः धर्मसाजः नका

नासिदहिनी न कुरु देव का १ सर्वा १ कुरु धी प्र कि मां चि न ॥ कुरु दान य क १ क्षा निं व स्व सि
 यष्टि च सर्व १ ॥ यत्कुरु का य ई पायं यत्कुरु वा र्ज पायं यत्कुरु वि रु र्ज पायं कत्सर्व कुरु
 महसि ॥ न मे कुरु व द्ध अ न न ॥ ग व ना य न मा कुरु स ल्य प्र का षा म न स ल्य प्र कि
 स्र प्र जा प्र मा च स सर्व च का र्था ॥ १ स रु ला रु व रु प्र सी द य न म र्ध न य न म र्ध नि ॥
 ॥ ० ॥ देव या क द षा य कि न य ॥ कुरु देव वि धि र्थ पू जा वा प्र ना य क य ॥ ॥ थ न षा ह षा
 कुरु वि य ॥ द षा व लि वि य ॥ थ न गु ष्ठ द षा क ल सा मा सा कुरु नि य च धा ना हा य क षि ना कुरु नि

६५

२३

क्षालि ल हि च कः क मा नी पू जा ॥ अ ग म म क ल सा म न ड ॥ ॥ अ ल य स वी ड क सी मि ड
 न क न क हा य क ॥ थ न षि षा धि वा स न म षु ल थ ल र्वा का न य ष्ठ या य क मा र्प न स ग
 न क च क पू जा द क षा आ षी र्वा ॥ द ल षा रि र्थ क ॥ षा वा कुरु नि ल षा क ला य ० ना य
 लि र्थ ॥ वि स र्ज न ॥ न क म षु लः ॥ क ल सा वि धि र्थ न क प्र वा रु यो षा ड लि र्थ या
 को मा नि पू जा या य ॥ प्र कि म षु ल क ल सा य ष्ठ म या सी का मा नी पू जा या य ॥ य ष्ठ या य षा
 वा कुरु नि या य वि स र्ज न म षु ल पा ना हा य म षु ल ला य या य कि ल लि य ॥ ॥ ० नि द

शक्रियाविधिसमापः॥

॥ ॐ ॥

१०

२४

प्रसादिता ॥

वयं व. सह जान न्याय न्या मरु ॥

पजा. मित्राधिवासन. मलु लथि लमुति. गव वरवाल दूय. पूरु दूति याय. अमा क्रन ॥

आमिर्वा द. सर्वमाह निष्कय ॥

कस्य कमा नीय जा सुय. कमा नी

कलुल ॥ समया चक्र ॥ अथाहूति. य क अलि वि स र्जन ॥ सी हा न ॥ गीत. ऊ र्य शाय ला र्य मु

क वि स र्जन. मलु लया क क अदि स र्ज क्रा य ॥ ग ल व क धू मा ग नी ॥ अ व व लि ॥ गीत. प्र मः

॥ दक्षपति नयकः सा १५४ ॥

॥ धनकामा नी

च न पूजा. द कृष्ण. वा धान. नि स ला उ. द गु स म य

या च न स्त्री. म हा नी का र्य ॥ वा ही क य ॥ गीत. च की

कलुल ॥ समया चक्र ॥ अथाहूति. य क अलि वि स र्जन ॥ सी हा न ॥ गीत. ऊ र्य शाय ला र्य मु

क वि स र्जन. मलु लया क क अदि स र्ज क्रा य ॥ ग ल व क धू मा ग नी ॥ अ व व लि ॥ गीत. प्र मः

क वि स र्जन. मलु लया क क अदि स र्ज क्रा य ॥ ग ल व क धू मा ग नी ॥ अ व व लि ॥ गीत. प्र मः

जिनाः यश्च कृपनिवर्तकः जिनागुह्यह्ना नादयः भाकपदं यस्या रुस्य कृपागु नरुस्य मनसा नि
 र्णयप्रसं क्षयवह ॥ ॥ क्षमाकृतः स्वमार्पन ॥ यच्चंगमा चाकृथेवस्तु वनास्तु सर्वसत्त्वा
 सुखिनो रुवकु। सास्तु नमस्तु न नदवपूर्यवृद्धं नमस्तु ॐ हामुस्तु ॥ यच्चंगमाः चाकृ
 नथेवस्तु वनास्तु सर्वसत्त्वाः सुखि नारुवकु। सार्कवी नार्गुन नदवपूर्यः धर्मनमस्तु ॐ हामु
 सुखि ॥ यच्चंगमाः चाकृथेवस्तु वला सर्वसत्त्वाः सुखिनो रुवकु। गहानमस्तु न नदवपूर्यसंघं
 नमस्तु ॐ हामुस्तु ॥ श्रीविर्वा ददयपनि सिद्धपाल ॥ ॐ निक्षयवलिसमाफ ॥ ॥ ॐ ॥

काजिनाः यश्च कृपनिवर्तकः जिनागुह्यह्ना नादयः भाकपदं यस्या रुस्य कृपागु नरुस्य मनः
 सानि र्णयप्रसं क्षयवह ॥ ॥ क्षमाकृतः स्वमार्पन ॥ यच्चंगमा चाकृथेवस्तु वनास्तु सर्वसत्त्वाः
 ॥ सिद्धपाल ॥ ॥ ॐ निक्षयवलिसमाफ ॥ ॥ ॐ ॥

आशा बरकाथ

2657

ASHA ARCHIVES

2